शेख़ फ़रीद – सबद १०५

फरीदा रुति फिरी वणु क्मबिआ पत झड़े झड़ि पाहि ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८३

फरीदा रुति फिरी वणु क्मबिआ पत झड़े झड़ि पाहि ॥
चारे कुंडा ढूंढीआं रहणु किथाऊ नाहि ॥१०२॥

सार: मन निरंतर स्थायित्व की खोज में लगा रहता है, यह विश्वास करते हुए कि कोई नया स्थान, संबंध या परिस्थिति अंततः उसे खोने के दर्द से मुक्त कर देगा । लेकिन हर मोड़ पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सृष्टि में ऐसा कुछ भी नहीं है जो बदलाव से गुज़रकर विकसित न हो। जिससे मन भागना चाहता है, वह असल में प्रकृति का ही एक अभिन्न अंग है। जैसे-जैसे यह प्रक्रिया सामने आती है, स्थिरता की बेचैन खोज, अपनी ही व्यर्थता को उजागर कर देती है। अंततः जो बचता है, वह ज्ञानवर्धक जागरूकता का बोध है कि स्थायित्व असल में कभी खोया ही नहीं था, वह तो अस्तित्व के मूल में बसा है।

फरीदा रुति फिरी वणु क्मबिआ पत झड़े झड़ि पाहि ॥
फ़रीद कहते हैं कि मौसम बदल गया है, जंगल काँप रहा है और पत्ते निरंतर गिर रहे हैं। यह दर्शाता है कि समय का गुज़रना जीवन की अस्थिरता को दिखाता है जिसमें पहचानें धुंधली पड़ जाती हैं।

चारे कुंडा ढूंढीआं रहणु किथाऊ नाहि ॥१०२॥
मैंने चारों दिशाओं में खोजा है, फिर भी मुझे कोई ऐसी जगह नहीं मिली जहाँ कुछ भी स्थायी हो। यह दिखाता है कि सृष्टि में सब बदलाव के अधीन है और यह ज़ाहिर करता है कि स्थायित्व एक भ्रम मात्र है। (१०२)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद बदलते मौसमों को हमारे आंतरिक जीवन के रूपक के तौर पर प्रयोग करते हैं। जैसे-जैसे हम अपने आस-पास सब कुछ बदलते हुए देखते हैं, हमें एहसास होता है कि यह प्रक्रिया

हमारे नियंत्रण से बाहर है। लहराते हुए पेड़ हमारी अनिश्चितताओं के प्रतीक हैं, जो स्थिर लगता है, वह अक्सर क्षणभंगुर होता है। यह पल हमें बदलाव को गरिमा और दृढ़ता के साथ अपनाने के लिए प्रेरित करता है और समझने में मदद करता है कि यह हमारी प्रगति के लिए अनिवार्य है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com